Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

Original Article

झारखंड में औद्योगिक नगरों का विकास

मधुबाला कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, नीलाम्बर–पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर, पलामू
Email: madhubalakumari37241@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171128
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 11(A)
Pp. 150-153
November. 2025
Submitted: 18 Oct. 2025
Revised: 28 Oct. 2025
Accepted: 11 Nov. 2025
Published: 30 Nov. 2025

सारांश

झारखण्ड में औद्योगिक इकाइयों की भरमार है लेकिन इन केन्द्रों की सघनता, आपसी सम्बन्ध, उनमें नगरीय जनसंख्या, यातायात सुविधाएँ आदि अनेक महत्वपूर्ण आवश्यक तत्वों के अभाव के कारण पश्चिमी देशों में दिखाई पड़ने वाले औद्योगिक नगरों की तरह यहाँ के औद्योगिक नगरों का स्वरूप निर्मित नहीं हो पाया है। औद्योगिक नगर को रेखांकित किया जाए तो ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत उस क्षेत्र में अधिक हो जाता है न कि नगरीय जनसंख्या का अनेक औद्योगिक नगरों में यातायात के साधन विकसित हुए ही नहीं हैं। खनन औद्योगिक नगरों में यातायात के लिए बहुत ही अविकसित मार्ग हैं। झारखण्ड में प्रमुख औद्योगिक नगरो में प्रमुख है। अभ्रक औद्योगिक नगर, दामोदर. घाटी औद्योगिक नगर, बॉक्साइट खनन औद्योगिक नगर, राँची औद्योगिक नगर, जमशेदपुर औद्योगिक नगर, घाटशिला बहरागोड़ा औद्योगिक नगर और पश्चिमी सिंहभूम औद्योगिक नगर है।

मुख्य शब्द : *औद्योगिक नगर, बॉक्साइट, सड़क मार्ग, मैगनीज।*

आधुनिक नगरीय क्षेत्रों का विकास झारखण्ड के संक्रमण काल में प्रारम्भ होता है। वेस्ट फ्रंटियर एजेन्सी के एजेन्ट के रूप में अंग्रेजों का जब प्रथम आगमन झारखण्ड क्षेत्र में हुआ तो अपना मुख्यालय शेरघाटी के बाद सर्वप्रथम चतरा में ही बनाया। 1771 से 1780 के बीच चतरा कमिश्नरी मुख्यालय रहा। इस समय अंग्रेजों का आना जाना शेरघाटी और चतरा दोनों जगहों में था। किंतु स्थायी रूप से इनका निवास 1780 में रामगढ़ हुआ। यहाँ 1834 तक इसका मुख्यालय रहा। इस प्रकार झारखण्ड का प्रथम शहर देवघर के बाद चतरा दूसरा और रामगढ़ तीसरा नगर था। 1780 तक झारखण्ड में तीन प्रमुख नगरों की स्थापना हो चुकी थी।

1843 में लोहरदगा मुख्यालय बनाया गया। यह वह काल है जब 1845 में देश पहली बार रेल से परिचित हुआ। 1852 में राँची का बीजारोपण किसुनपुर में किया गया जब लोहरदगा से मुख्यालय हटाकर यहाँ ले आया गया। 1855 में संथाल परगना जिला का मुख्यालय दुमका बना। 1860 में डालटनगंज शहर की स्थापना पलामू में की अब इस शहर को 'मोदीनीनगर' के नाम से जाना जाता है। बाद में (1892 में) यह जिला बनाया गया । 1880 में धनबाद शहर की स्थापना हुई और 1886 में हजारीबाग नगरपालिका का गठन हुआ जिसमें अंग्रेज ही चेयरमैन होता था। 1891 में झरिया शहर की स्थापना कोयला खनन के लिए हुई और इस शताब्दी के अंत में (1900 ई० में) कोडरमा की स्थापना हुई यह 19वीं शताब्दी का अंत था।[1]

20वीं शताब्दी के आरम्भ में गुमला सबडिवीजन घोषित होता है, 1905 में खूँटी अनुमण्डल बनाया जाता है। 1907 में साकची में जमशेदपुर या टाटानगर की स्थापना होती है और झारखण्ड में बड़े निर्माण उद्योग की शुरूआत होती है। 1915 में सिमडेगा अनुमण्डल बनाया जाता है। 1949 में चाईबासा शहर चिह्नित होता है क्योंकि सिंहभूम जिले का गठन होता है। इससे दो वर्ष पूर्व देश आजाद हुआ था। आजादी के बाद झारखण्ड की बड़ी उपलब्धि थी। 1964 में बोकारो इस्पात कारखाना की स्थापना या इस्पात नगर की स्थापना।

आजादी के पूर्व झारखण्ड में नगरीकरण की गति धीमी कही जा सकती है जो आजादी के बाद काफी तीव्र हो गयी है। खनन उद्योग, दामोदर घाटी परियोजना, टाटा इस्पात नगर आदि के कारण अनेक उद्योगों की शुरूआत इस क्षेत्र में हुई जिससे अनेक छोटे–छोटे नगरीय केन्द्र उद्भूत हुए, सिंदरी, कतरास, बोकारो, करगली, जसीडीह, बेरमो, फुसरो आदि कई नगर उभरे। लोहा और ताँबा खनन उद्योग के कारण जमशेदपुर घाटशिला, मुसाबनी, गुआ आदि शहरों का विकास हुआ।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
मधुबाला कुमारी, शोधार्थी, इतिहास विभाग, नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर, पलामू

How to cite this article:
कुमारी, . मधुबाला . (2025). झारखंड में औद्योगिक नगरों का विकास. Journal of Research and Development, 17(11(A)), 150–153. https://doi.org/10.5281/zenodo.17974444

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17974444
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

2011 की जनगणना में झारखण्ड में 11 नगरीय संकूल, बताये जा रहे हैं। इनके अंतर्गत नगरपालिका, नगरपालिका परिषद्, नगर परिषद, अधिसूचित क्षेत्र समिति, जनगणना शहर, कैन्टोनमेंट बोर्ड, तथा आउटग्रोथ जैसे क्षेत्रों को शामिल किया गया है। ये 11 संकुल निम्नवत् हैं–

जमशेदपुर नगरीय संकुल जमशेदपुर (औद्योगिक नगर), जमशेदपुर अधिसूचित क्षेत्र, टाटा नगर रेलवे कॉलोनी, मानगो, जुगसलाई, बागबेड़ा, छोटा गोविंदपुर, हालुदबानी, सारजामदा, गाधरा, घोड़ाबाँधा, पुरीहासा (CT), आदित्यपुर, छोटा गम्हरिया और कपाली, धनबाद नगरीय संकुल धनबाद, पोंडर कनाली, मलकेरा, बउआ कलान, और नगरी कलान। राँची नगरीय संकुल राँची, कांके, अरसण्डे, आरा, तुन्डिउल, बरगरवा। बोकारो स्टील सिटी नगरीय संकुल–बोकारो स्टील सिटी, चास और बाँधघोड़ा। चक्रधरपुर नगरीय संकुल–चक्रधरपुर नगर। फुसरो नगरीय संकुल– फुसरो, बेरमो, जरीडीह बाजार, बोकारो और कुडपनियाँ।[2]

समान प्रकार के उद्योगों की स्थापना जब एक ही क्षेत्र में अधिकाधिक हो जाती है तो उससे समान प्रकार की औद्योगिक दृश्यावली उपस्थित हो जाती है। समूहों में होने के कारण उनमें प्रादेशिक चरित्र दिखाई पड़ने लगता है। उद्योगों के ऐसे एकत्रीकरण को या ऐसे समूहीकरण को औद्योगिक नगर कहा जाता है।

यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है कि यदि किसी नगर में विभिन्न प्रकार के उद्योगों की स्थापना हो जाए और उनका आपस में कुछ न कुछ सम्बन्ध भी हो तो वहाँ पर एक औद्योगिक स्वरूप भी उभरने लगता है। वहाँ के श्रमिकों में एक ही परिवार के सदस्य कई प्रकार के कारखानों में काम करने लगते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कहीं पर कोई बड़ा कारखाना स्थापित हो जाना कोई औद्योगिक नगर नहीं है बल्कि उस कारखाने के कारण उससे संबंधित अनेक छोटे–छोटे कारखाने स्थापित होने लग जायँ तो एक औद्योगिक नगर का निर्माण हो सकता है। औद्योगिक नगर में कारखाने के स्तर व उनकी संख्या की तुलना में उद्योगों की संबद्धता का काफी महत्व होता है। औद्योगिक संबद्धता ही नगर का निर्माण करता है।

एक औद्योगिक नगर में निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए

1. औद्योगिक नगर में कारखानों की विविधता होती है तथा उनकी संख्या भी बहुत अधिक होती है।
2. औद्योगिक नगर में कई छोटे–बड़े नगर समाहित होते हैं तथा उस नगर में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत अधिक होता है।
3. औद्योगिक नगर के भीतर रहने वाली जनसंख्या का कार्य उद्योगों में कार्य करना होता है न कि कृषि करना।
4. औद्योगिक नगरों में परिवहन साधनों का उच्चतम विकास होता है।
5. औद्योगिक नगरों में मुद्रा नियंत्रण के लिए बड़े–बड़े बैंक होते हैं।
6. प्रत्येक औद्योगिक नगर मनोरंजन के साधनों से भरपूर होता है। सिनेमाघर, क्लब, पार्क, बड़े–बड़े होटल आदि उसके अनिवार्य हिस्से होते हैं।[3]
7. कारखाने केवल नगरों में ही नहीं बल्कि दो नगरों के बीच परिवहन मागर्गों पर भी स्थित होते हैं।
8 औद्योगिक नगरों के भूदृश्य में कारखाने, धुआँ, चिमनियाँ, श्रमिकों के आवास आदि प्रमुख होते हैं।

इस प्रकार विशेषताएँ जब किसी औद्योगिक क्षेत्र में दिखाई पड़ने लगती है तब वह क्षेत्र औद्योगिक नगर कहलाने लायक हो जाता है। वास्तव में औद्योगिक क्षेत्र वह क्षेत्र है जहाँ कोई एक वृहद उद्योग विकसित होने के साथ–साथ उनसे संबंधित अनेक उद्योग पनप चुके हों।

झारखण्ड के प्रमुख औद्योगिक नगर

झारखण्ड में औद्योगिक इकाइयों की भरमार है लेकिन इन केन्द्रों की सघनता, आपसी सम्बन्ध, उनमें नगरीय जनसंख्या, यातायात सुविधाएँ आदि अनेक महत्वपूर्ण आवश्यक तत्वों के अभाव के कारण पश्चिमी देशों में दिखाई पड़ने वाले औद्योगिक नगरों की तरह यहाँ के औद्योगिक नगरों का स्वरूप निर्मित नहीं हो पाया है। उदाहरण के रूप में अगर यहाँ किसी भी औद्योगिक नगर को रेखांकित किया जाए तो ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत उस क्षेत्र में अधिक हो जाता है न कि नगरीय जनसंख्या का अनेक औद्योगिक नगरों में यातायात के साधन विकसित हुए ही नहीं हैं। खनन औद्योगिक नगरों में यातायात के लिए बहुत ही अविकसित मार्ग हैं। बॉक्साइट खनन क्षेत्रों का तो दृश्य ही अलग है। यहाँ सड़क मार्ग अभी भी कच्चे हैं। फिर भी झारखण्ड को निम्नलिखित औद्योगिक नगरों हैः–

1. अभ्रक औद्योगिक नगर
2. दामोदर. घाटी औद्योगिक नगर
3. बॉक्साइट खनन औद्योगिक नगर
4. राँची औद्योगिक नगर
5. जमशेदपुर औद्योगिक नगर
6. घाटशिला बहरागोड़ा औद्योगिक नगर
7. पश्चिमी सिंहभूम औद्योगिक नगर ।

1. अभ्रक औद्योगिक नगर

झारखण्ड में जिन सात औद्योगिक नगरों का उल्लेख किया गया है उनमें राँची और जमशेदपुर को छोड़कर प्रत्येक औद्योगिक नगर खनन से जुड़ा हुआ है। प्रस्तुत अभ्रक औद्योगिक नगर की खनन औद्योगिक नगर ही है।[4] इसका विस्तार गिरिडीह, कोडरमा, धनवार, डोमचांच, जमुआ, जमुआ, तिसरी, गाँवा आदि क्षेत्रों में है। यहाँ अभ्रक का विशाल भण्डार सुरक्षित है। ये काफी उच्चकोटि के अभ्रक हैं। रूबी अभ्रक के नाम से विख्यात यह क्षेत्र विश्व प्रसिद्ध है। अभ्रक परिष्करण (च्तवबमेपदह) के लिए डोमचांच, झुमरी तिलैया, गिरिडीह तथा चकई में कई उद्योग लगे हुए हैं। औद्योगिक क्षेत्र में यातायात की सुविधा प्रमुख शर्त होती है और इस क्षेत्र में यह सुविधा सड़क तथा रेल मार्ग के रूप में मौजूद है। हजारीबाग–नवादा मार्ग NH 23, धनबाद–गया

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

रेलमार्ग, गिरिडीह–मधुपुर रेलमार्ग तथा अन्य सड़क मार्ग यहाँ पूरी तरह उपलब्ध हैं। परन्तु नगरीय जनसंख्या ग्रामीण जनसंख्या की तुलना में कम है। प्रमुख शहर गिरिडीह और कोडरमा भी है।

इस औद्योगिक नगर में अभ्रक खनन से जुड़े लगभग 500 छोटे–छोटे उद्योग थे जिसमें लगभग 400 उद्योग अब बंद हो चुके हैं। खनिजों का भण्डार सीमित होता है और एक समय आता है जब उत्खनन आर्थिक नहीं रह जाता है। ऐसे में खनिजों के मौजूद रहते हुए भी उन्हें बंद होना पड़ता है। अभ्रक औद्योगिक नगर की यही स्थिति है।

2. दामोदर घाटी औद्योगिक नगर

यह औद्योगिक नगर केवल झारखण्ड ही नहीं बल्कि भारत के विकसित औद्योगिक नगरों में एक है। यहाँ गोंडवाना निक्षेपण के कारण कोयला का विशाल भण्डार हमेशा हुआ है जो खनन उद्योग विकसित करने का आधार प्रदान करता है। कोयला खनन होने के कारण इससे सम्बन्धित अनेक प्रकार के उद्योगों का विकास हुआ है। इस क्षेत्र में कोक उद्योग, लोहा उद्योग, खाद उद्योग, रिफेक्ट्री उद्योग, इंजीनियरिंग उद्योग, कांच उद्योग तथा बारूद उद्योग आदि अनेक उद्योग विकसित हुए हैं। इनका विस्तार क्षेत्र गोमियाँ से कुमारधुबी, चिरकुण्डा तथा चास, चंदनकियारी से तोपचाची, गोविंदपुर तक देखा जाता है। यह क्षेत्र मुख्यतः धनबाद और बोकारो जिला क्षेत्रों में पूरब पश्चिम विस्तार में स्थित है। प्रमुख औद्योगिक स्थान के रूप में गोमियाँ, बोकारो, चास, चंदनकियारी, चन्द्रपुरा, कठारा, दुग्दा, गिद्धी, करगली, सवांग पश्चिमी बोकारो, धनबाद, झरिया, सिंदरी, कुमारधुबी, बिरसा, चिरकुण्डा, मैथन, पंचेत आदि का नाम उल्लेखनीय है।

इस क्षेत्र में नगरीय जनसंख्या अधिक तो है ही यातायात के साधन भी सुविकसित है। इसका विकास अभी भी निरंतर जारी है जिसका कारण है कोलकाता महानगर एवं हुगली औद्योगिक नगर का निकट होना।

3. बॉक्साइट खनन औद्योगिक नगर

इस नगर को कई भागों में सम्बोधित किया जाता है यथा लोहरदगा औद्योगिक क्षेत्र, पाट औद्योगिक क्षेत्र या बॉक्साइट औद्योगिक क्षेत्र । वस्तुतः यह क्षेत्र स्थानीय नाम में 'पाट' कहा जाता है।[5] यह राँची पठार का पश्चिमी भाग है जहाँ क्रिटेशियस काल में लावा निक्षेपण हुआ था जिसके रासायनिक विघटन के फलस्वरूप बॉक्साइट का निर्माण हुआ है।बॉक्साइट निक्षेपण का क्षेत्र गुमला जिला के उत्तरी भाग में लातेहार के दक्षिणी भाग में तथा लोहरदगा के उत्तरी–पश्चिमी भाग में विस्तृत है और यही है बॉक्साइट उत्खनन औद्योगिक नगर।

लातेहार जिला क्षेत्र में बॉक्साइट का विस्तार नेतरहाट पाट, जोड़ा डूमर पाट, जमीरा पाट, पेसरार पाट आदि में है जबकि गुमला और लोहरदगा क्षेत्र में इनका उत्खनन खमार पाट, मडुआ पाट, दुधिया पाट, बंगला पाट, महुआ पाट, पाखर पाट, रूदनी पाट, बगरू पाट, मैदान पाट, दुधा पाट, सेरेंगदाग पाट, कचकी पाट आदि में होता है। यहाँ चाइना क्ले, लिग्नाइट खनिजों की प्राप्ति बॉक्साइट के साथ ही होती है किंतु मुख्य खनिज बॉक्साइट होने के कारण यह बॉक्साइट क्षेत्र के नाम से जाना जाता है।यह क्षेत्र पूर्णतः ग्रामीण परिवेश में है। यू कहें जंगल में है। नगरीय जनसंख्या सिर्फ लोहरदगा जैसे छोटे शहर में है जो इस नगर का एक मात्र शहर है। आवागमन के लिए सड़कों की स्थिति अच्छी नहीं है। अभी भी ये कच्ची हैं।

वस्तुतः यह एक संभावित औद्योगिक नगर है। यहाँ अल्युमीनियम प्रोसिडिंग प्लांट की आवश्यकता है जो वगरू, खमार, लोहरदगा आदि जगहों में लगाये जा सकते हैं।[8] इससे मूरी तक बॉक्साइट ढुलाई का खर्च बच जाएगा। जरूरत है पर्याप्त जल और सस्ती पनबिजली की।

4. राँची औद्योगिक नगर

स्वर्ण रेखा नदी निकट में होने के कारण इसे ऊपरी स्वर्ण रेखा औद्योगिक नगर भी कहा जाता है। किंतु राँची अब झारखण्ड की राजधानी बन चुका है अतः राजधानी के नाम पर ही औद्योगिक नगर का नाम अप्रासंगिक नहीं होगा। वैसे इसका विस्तार क्षेत्र भी इसी को प्रासंगिक मानता है। प्रमुख औद्योगिक केन्द्र के रूप में पतरातु, रामगढ़, ओरमांझी, हटिया, राँची, नामकुम, टाटी सिलवे तथा मूरी है। अर्थात् इस क्षेत्र का विस्तार पतरातु रामगढ़ से बुण्डू तमाड तक और रातु से मूरी तक जो पश्चिमी राँची जिला क्षेत्र में व्याप्त है तक माना जाता है।

इस क्षेत्र में मूरी का अल्युमिनियम कारखाना, रामगढ़ क्षेत्र के कोक–कोयला उद्योग, काँच उद्योग, ओरमांझी का सूत उद्योग, रातु का बॉल वियरिंग उद्योग, सामलौंग का हाई टेंशन इन्सुलेटर कारखाना, टाटी सिलवई का उषा मार्टिन, उषा बेल्ट्रॉन, नामकुम का लाह उद्योग, राँची में ऑटोमोबाइल बॉडी बिल्डिंग, बाल्टी निर्माण उद्योग तथा अन्य घरेलू उद्योग कृषि के लिए पम्प, स्पून पाइप, वायर एवं इंजन आदि का उद्योग विकसित हुआ है। हटिया का एच० ई० सी०, तुपुदाना का ग्रेनाइट खनन उद्योग, खूंटी का ब्लैक ग्रेनाइट उद्योग आदि भी महत्वपूर्ण केन्द्र है।

इस औद्योगिक केन्द्र का अभी विस्तार होना बाकी है। बहुत सारे क्षेत्र ऐसे हैं जो एक क्षेत्र से दूसरे का कोई सम्बन्ध नहीं समझते। पतरातू और रामगढ़ क्षेत्र ऐसे राँची के औद्योगिक नगर के अन्तर्गत होने के बावजूद अलग–अलग दिखाई पड़ता है लेकिन राँची से रामगढ़ तक सड़क मार्ग के अगल–बगल उद्योगों की संख्या खड़ी हो जाएगी तब यह एक अखण्ड नगर की तरह लगने लगेगा।[6] तब यह किसी पाश्चात्य देश के औद्योगिक नगर से कम नजर नहीं आएगा।

5. जमशेदपुर औद्योगिक नगर

झारखण्ड में ही नहीं सम्पूर्ण भारत में औद्योगिक क्रान्ति की शुरूआत करने वाला यह स्थान लोहा इस्पात उद्योग की स्थापना कर एक वृहद् औद्योगिक नगर का निर्माण किया है। इस क्षेत्र का विस्तार चांडिल से घाटशिला तक है। यह स्वर्ण रेखा नदी घाटी क्षेत्र में स्थित है अतः इसे स्वर्ण रेखा औद्योगिक नगर भी कहा जा सकता है। लेकिन इस नदी घाटी क्षेत्र में और भी दूसरे औद्योगिक नगर हैं जिसके कारण इसका नामकरण स्थान के आधार पर करना युक्तिसंगत प्रतीत हो रहा है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

इस क्षेत्र में प्रमुख औद्योगिक केन्द्र जमशेदपुर, चांडिल, कांडरा, जुगसलाई, पोटका, पटमदा, नीमडीह आदि हैं। जमशेदपुर से 75 कि०मी० की परिधि में इस औद्योगिक केन्द्र का विस्तार है। यहाँ टेल्की, इण्डियन स्टील तथा वायर प्रोजेक्ट, ह्यूम पाइप फैक्टरी, टीन प्लेट फैक्टरी, इण्डियन केबल फैक्टरी, इण्डियन ट्यूब कं०, ऑक्सीजन संयंत्र आदि प्रमुख उद्योग हैं। एग्रीको, जहाँ कृषि उपकरण बनते हैं, टी० आर० एफ० जहाँ औद्योगिक मशीन बनते हैं। रोलर बियरिंग, ग्लास उद्योग स्पंज आयरन, केबल उद्योग आदि यहाँ प्रमुख उद्योग हैं।

इस प्रकार उक्त सभी उद्योग टाटा स्टील कं० के स्थापित होने के बाद इसके आसपास आवश्यकतानुसार पनपने लगे। झारखंड के किसी भी औद्योगिक नगर की तुलना में यहाँ अधिक सम्पन्न, सघन एवं वृहद औद्योगिक नगर की सारी विशेषताएँ देखी जा सकती है। इसी तरह का सम्पन्न एवं सारी विशेषताओं से युक्त औद्योगिक नगर दामोदर घाटी नगर में भी है किंतु इन दोनों में अन्तर यह है कि जमशेदपुर औद्योगिक नगर इंजीनियरिंग औद्योगिक नगर है तो दामोदर घाटी औद्योगिक नगर खनन औद्योगिक नगर है। इसे कोयला औद्योगिक नगर भी कहा जा सकता है।

6. घाटशिला बहरागोड़ा औद्योगिक नगर

झारखण्ड में यह औद्योगिक नगर को पूर्वी सिंहभूम औद्योगिक नगर के नाम से भी कहीं–कहीं सम्बोधित किया गया है किंतु सम्पूर्ण पूर्वी सिंहभूम क्षेत्र में इसका विस्तार नहीं होने के कारण यह नाम युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता है।[7] चूंकि इसका विस्तार घाटशिला से बहरागोड़ा तक हैं अतः इसी नाम से इसे सम्बोधित करना प्रासंगिक लगता है।

इस क्षेत्र में प्रमुख औद्योगिक केंद्र घाटशिला, मुसावनी, डुमरिया, चाकुलिया, जादूगोडा, बहरागोडा आदि हैं। यहाँ मुख्य रूप से ताँबा और यूरेनियम के खान हैं ताँबा के प्रमुख क्षेत्रों का विस्तार धोबनी, मुसाबनी, सुरादा, केन्दाडीह, पाथरगोडा, राखा आदि स्थानों में है।

यहाँ ताँबा पेटी का विस्तार 160 कि०मी० लम्बे क्षेत्र में दुआरपुरम तथा बहरागोड़ा के बीच है। यहाँ आवागमन की सुविधा रेल और सड़क दोनों साधनों द्वारा है। इस औद्योगिक नगर का विकास मूल रूप से परिवहन, संचार और विद्युत विकास की भावी संभावनाओं पर आश्रित है। किंतु अब इसके विकास पर प्रश्न चिह्न लग चुका है क्योंकि ताँबा अयस्कों का खनन अब आर्थिक नहीं रहा जिसके कारण 10 लाख टन वार्षिक उत्पादन करने वाले खदान अब बंद हो चुके हैं।

7. पश्चिम सिंहभूम औद्योगिक नगर

झारखंड में पश्चिम सिंहभूम का पश्चिमी भाग पोराहाट और सारंडा के जंगलों से आच्छादित है जबकि पूर्वी भाग औद्योगिक केन्द्र के रूप में चाइबासा, झींकपानी और नोवामुंडी है। इनके अतिरिक्त जामदा, गुआ, नाटुबुरू, बुढाबुरू, मोहनपुर आदि में खनन कार्य होते हैं। यहाँ कराईकेला में क्रोमियम, नोवामुण्डी, जामदा बुढ़ावुरू में लोहअयस्क, मोहनपुर में मैगनीज, चाईबासा में बीड़ी उद्योग, झींकपानी में सीमेंट उद्योग आदि का विकास हुआ है। यह भी महत्वपूर्ण औद्योगिक नगर है। यह कोलकाता मुंबई रेलमार्ग पर स्थित क्षेत्र है।

इस प्रकार सम्पूर्ण झारखण्ड में नौ जिले ऐसे बच रहे हैं जिनका विकास औद्योगिक क्षेत्र के रूप में नहीं हुआ है, वे क्षेत्र हैं, लातेहार, दुमका, देवघर, जामताड़ा, खूँटी, सिमडेगा, गुमला, चतरा और पश्चिम सिंहभूम। झारखण्ड सरकार इन क्षेत्रों में औद्योगिक विकास कर सकती है। 1992 में इस प्रकार की योजना बनायी जा चुकी है। इन क्षेत्रों में खनिज उद्योगों के अलावा वन उत्पादन उद्योग भी विकसित हो सकते हैं। गुमला सिमडेगा खूँटी में वनोत्पाद और कृषि आधारित उद्योग विकसित हो सकते हैं। झारखण्ड में वृहत् उद्योगों की संख्या 167 है जो 15 जिलों में है।[8] इनकी विस्तृत सूची परिशिष्ट 25 में देखी जा सकती है।

संदर्भ सूची

1. राजकुमार तिवारी, झारखण्ड का भूगोल, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 2019, पृ.–391
2. वही, पृ.–396
3. सुरेश चन्द्र बंसल, नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ पृ.–78
4. वही, पृ.–282
5. राजकुमार तिवारी, पूवोद्धृत पृ.–283
6. वही, पृ.–284
7. वी.एन.पी. सिन्हा, एल.के.पी. सिंह, मनोज कुमार, झारखंड लैंड एण्ड पीपुल, राजेश पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2018, पृ.–453
8. वही, पृ.–454